चन्द्र ग्रह की पौराणिक कथा

चन्द्रमा ब्रह्मा जी के मानस पुत्र महर्षि अत्रि और अनुसूया की संतान है। पौराणिक कथा के अनुसार अनुसूया के पतिव्रत्य की चर्चा तीनों लोकों में विख्यात थी, इसी पतिव्रत्य की परीक्षा लेने हेतु त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) ने भिक्षुओं का भेष धारण कर अनुसूया के आश्रम पहुंचे और अनुसूया को निर्वस्त्र होकर भोजन कराने के लिए कहा, अनुसूया ने अपने तपोबल के आधार पर तीनों त्रिदेवों को नवजात शिशुओं के रूप में परिवर्तित करके निर्वस्त्र होकर भोजन कराया और अपने पतिव्रत्य और गृहस्थ धर्म का पालन और रक्षा की। किन्तु इस प्रकार त्रिदेवों को नवजात शिशुओं के रूप में देखकर उनके अन्दर प्रबल मातृत्व जाग गया और उन्होंने त्रिदेवों को ही पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए कठिन तप किया, जिसके परिणाम स्वरूप उनको तीन पुत्र क्रमशः दत्तात्रेय, चन्द्रमा और दुर्वासा के रूप में प्राप्त हुए। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूया ने चन्द्ररूपी कांतिमय पुत्र की कामना से घनघोर तप किया, जिससे उनके नेत्रों से एक द्युति (प्रकाश) निकली, जिसे दसों दिशाओं ने उस कांतिमय तेज को पालन पोषण के लिए अपने गर्भ में रख लिया, किन्तु दसों दिशाओं से वह तेज संभाला न गया और दसों दिशाओं ने उस ज्योति रूपी तेज को पृथ्वी पर गिरा दिया। आगे चलकर ब्रह्मा जी ने उसे संभाला और उस तेज को अनेकों बार पृथ्वी की परिक्रमा करवायी तथा दसों दिशाओं सहित उस नेत्र द्युति को अनेकों वेद मंत्रों के द्वारा शक्ति मिली और वह चन्द्रमा कहलाया। ब्रह्मा जी ने चन्द्रमा को अनेकों आशीर्वाद दिये और चन्द्रमा को सभी देवता, पित्तर, यक्ष और मनुष्य आदि में आप्यायन (पोषण) करने के लिए नियुक्त किया और साथ ही सभी प्रकार के बीजों, औषधियों, जल और ब्राह्मणों आदि का भी राजा बना दिया। एक अन्य कथा के अनुसार चन्द्रमा का विवाह संस्कार दक्ष प्रजापति की साठ कन्याओं में से सत्ताइस कन्याओं के साथ हुआ है जिन्हें हम आज सत्ताइस नक्षत्रों (अश्विनी, भरणी, कृत्तिका आदि) के नाम से जानते हैं। चन्द्रमा की सभी सत्ताइस पत्नियां सुन्दर, सुशील और पतिव्रता थी, पर चन्द्रमा का अनुराग केवल रोहिणी नाम की पत्नी से सबसे

अधिक था और उसी के साथ अधिक समय तक रहते थे, जिससे अन्य पत्नियों को चन्द्रमा के साथ रहने का अवसर नही मिलता था और वे सभी दुःखी होती थीं। इस बात की शिकायत उन्होंने अपनी मां से की और मां ने उनके पिता दक्ष को, दक्ष प्रजापति ने चन्द्रमा को बुलाकर सबसे समान रूप से प्रेम करने के लिए समझाया, परन्तु चन्द्रमा का अनुराग केवल रोहिणी के साथ ही बना रहा, अनेकों बार समझाने के बाद भी जब चन्द्रमा का अनुराग केवल रोहिणी के साथ ही रहा तो दक्ष प्रजापति ने क्रोधित होकर अपने ही दामाद चन्द्रमा को क्षय (गलना या कम होना) होने का शाप दे दिया। प्रजापति दक्ष के शाप से घबराकर चन्द्रमा ने सोमनाथ मंदिर (द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक) बनवाया और भगवान शंकर की आराधना की, भगवान शंकर ने चन्द्रमा की आराधना से प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया, जिसका परिणाम यह निकला कि चन्द्रमा कृष्णपक्ष में दक्ष के शाप से घटते रहते हैं और शुक्लपक्ष में भगवान शंकर के आशीर्वाद से बढ़ते रहते हैं। इस सभी शाप और आशीर्वाद के दौरान चन्द्रमा को अपनी गलती का भी अहसास हो गया और तभी से वह अपनी सभी सत्ताइस पत्नियों को बराबर समय देने लगे, यानि एक पत्नी को एक दिन, इसी लिए चन्द्रमा आज भी एक नक्षत्र में लगभग 24 घण्टों तक रहतें हैं और सत्ताइस नक्षत्रों की परिक्रमा सत्ताइस दिनों में पूरी कर लेते हैं। एक अन्य पौराणिक कथा में मिलता है कि चन्द्रमा का जन्म समुद्र मंथन के दौरान 14 रत्नों के साथ हुआ है। इस दृष्टिकोण से पुत्र हुए चन्द्रमा और पिता हुए समुद्र, जिसका स्नेह प्रमाण आज भी देखने को मिलता है। जब पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्रमा की किरणें समुद्र के ऊपर पड़ती हैं तो समुद्र का जलस्तर सामान्य स्तर से अधिक ऊपर हो जाता है जिसे ज्वार भाटा कहते हैं, इसका अभिप्राय यह है कि युवा पुत्र (चन्द्रमा) को देखकर पिता (समुद्र) उसे गले लगाने के लिए ऊपर उठना चाहता है।

चन्द्र ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

चन्द्रमा जो मन का कारक ग्रह भी है, जिसकी चंचलता को दसों दिशाएं भी न संभाल सकीं जो दसों दिशाओं में दिन रात दौड़ता रहता है, उस पर अपनी पकड़ बनाए रखना आसान

नही है, पर उचित मंत्रों का प्रयोग करके यह संभव हो सकता है कि मन आपकी पकड़ में आ जाए। ब्रह्मा जी ने सभी जीवों के आप्यायन (पोषण) करने के लिए चन्द्रमा को नियुक्त किया है, इसी चन्द्रमा से जातक की आयु और अरिष्ट का भी सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। 14 रत्नों के साथ जन्म लेने के कारण चन्द्रमा को धन का कारक ग्रह भी माना जाता है।

क्षीण चन्द्रमा या घटता हुआ चन्द्रमा या फिर कृष्ण पक्ष अष्टमी से लेकर शुक्ल पक्ष अष्टमी तक का चन्द्रमा दक्ष प्रजापति के शाप के कारण कमजोर या पापी माना जाता है, परन्तु बढ़ता हुआ शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा या फिर शुक्ल पक्ष अष्टमी से लेकर कृष्ण पक्ष अष्टमी तक का चन्द्रमा भगवान शंकर के आशीर्वाद के कारण शुभ और बलशाली माना जाता है। चन्द्रमा एक दिन में लगभग 13° से लेकर 15° बीच में चलता है और एक राशि में लगभग सवा दो (2¼) दिन तक रहता है। चन्द्रमा मन का प्रतिनिधित्व करता है। सभी नौ ग्रहों में चन्द्रमा की गति सबसे तेज होती है। मन का कारक होने के कारण मन में भी विचार तेजी से बदलते रहते हैं।

भारतीय वैदिक ज्योतिष शास्त्रों में चन्द्रमा का महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि जातक के जन्म के समय जिस नक्षत्र में चन्द्रमा का गोचर होगा उसी के अनुसार जातक को उसकी पहचान यानि नाम अक्षर या नाम प्राप्त होता है, जिससे वह पूरे जीवन भर प्रभावित रहता है। उसी जन्म नक्षत्र के आधार पर उसको विंशोत्तरी महादशाओं का क्रम प्राप्त होता है, उन्ही क्रमों के अनुसार उसे जीवन भर दशाओं का भोग करना पड़ता है। मूल नक्षत्र आदि का निर्धारण भी चन्द्रमा से ही होता है, चन्द्रराशि की प्राप्ति भी चन्द्रमा से ही होती है। मुहूर्त शास्त्र में चन्द्रमा की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है क्योंकि पक्ष, तिथि, नक्षत्र, त्यौहार, व्रत, आदि सभी का निर्णय चन्द्रमा के गोचर पर ही निर्भर करता है।

चन्द्र ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	मन
2	संबंध	माता
3	स्वभाव	सौम्य (शुभ)
4	गोत्र	जातमत्रि
5	दिन	सोमवार
6	वाहन	मृग (हिरण)
7	रंग	श्वेत
8	दिशा	पश्चिमोत्तर (West-North)
9	गुण (प्रकृति)	सतोगुण
10	लिंग	स्त्री
11	वर्ण (जाति)	वैश्य/ब्राह्मण
12	तत्व	जल
13	स्वाद	नमकीन, खट्टा
14	धातु	चांदी
15	ऋतु	वर्षा
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	चावल
18	शारीरिक अंग	बुद्धि, रक्त
19	अन्न दान	चावल, मिसरी
20	द्रव्य दान	दही
21	विंशोत्तरी महादशा	10 वर्ष
22	जप संख्या	11,000
23	रत्न	मोती, (संस्कृत में मुक्ता)
24	उपरत्न	चन्द्रमणि या चन्द्रकांत मणि
25	सहचरी	रोहिणी
26	चरादि	चंचल

27	समिधा	पलाश(ढ़ाक)
28	चन्द्रमा के मित्र ग्रह	सूर्य, बुध
29	चन्द्रमा के सम ग्रह	मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि
30	चन्द्रमा के शत्रु ग्रह	राहु, केतु
31	उच्च राशि	वृष (0° से 3° तक)
32	नीच राशि	बृश्चिक (0° से 3° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	वृष (3° से 30° तक)
34	स्वग्रही राशि	कर्क (0° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	कर्क
36	नक्षत्र स्वामी	रोहिणी, हस्त,श्रवण
37	चन्द्रमा के आधी देवता	जल
38	चन्द्रमा के प्रत्यधि देवता	पार्वती
39	चन्द्र ग्रह का कद	दीर्घ (लम्बा)
40	चन्द्र ग्रह शुष्काादि में	जलीय ग्रह